📖 उपन्यास का प्रथम पृष्ठ (Title Page)

क्रमांक विवरण सामग्री
1 पुस्तक का शीर्षक अस्तित्व की खोज
2 उपशीर्षक एक मन, अनेक आवाज़ें 3
लेखक अरुण सिंह (तेनजिन) 4 विधा मनोवैज्ञानिक उपन्यास 5
मुख्य विषय मानसिक स्वास्थ्य, भ्रम
और वास्तविकता का संघर्ष,
पारिवारिक आघात
6 केंद्रीय पात्र अरुण 7
परिवेश गाँव, शहर, छात्र जीवन,
मानसिक चिकित्सालय
8 प्रकाशन वर्ष 2025
9 प्रकाशक अरुण सिंह (तेनजिन)
10 समर्पण उन सभी के नाम, जो अपने
भीतर की आवाज़ों से संघर्ष
कर रहे हैं |

अनुक्रमणिका (Chapter Index)

क्रमांक अध्याय शीर्षक पृष्ठ संख्या

------- ------------------------- ------------

1 धुंध में खोया चेहरा ____
2 धुंध के उस पार ____
3 धुंध में बसी स्मृतियाँ ____
4 धुंध की परतें ____
5 कमरे की चुप बिखरी किताबें ____
6 शीशे में प्रधानमंत्री ____
7 कोई आ रहा है... ____
8 नरक के दूत ____

9 अधूरी उड़ान ____

कॉपीराइट फ्री घोषणा

यह कहानी पूर्णतः कॉपीराइट मुक्त (Copyright Free) है। लेखक द्वारा इसे सार्वजनिक उपयोग के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराया गया है। कोई भी व्यक्ति इस कहानी को अपने नाम से प्रकाशित, छपवा, साझा या किसी भी माध्यम में उपयोग कर सकता है।

इस पर किसी प्रकार का कॉपीराइट दावा, कानूनी प्रतिबंध या स्वामित्व अधिकार लागू नहीं है। यह रचना पूर्णतः सार्वजनिक उपयोग (Public Domain) के अंतर्गत प्रदान की गई है।

सभी पाठकों और रचनाकारों को इसे स्वतंत्र रूप से उपयोग करने की अनुमति है।

अध्याय 1 धुंध में खोया चेहरा

(दोपहर का समय सपने में कक्षा का दृश्य कमरे में शांति और मन को विचलित कर देने वाला सन्नाटा पसरा है। कक्षा में सभी छात्र अपनी अपनी जगह पर गणित का पेपर देने बैठे हैं। अरुण गुमसुम सा बैठा है। उसके चेहरे पर घबराहट और तनाव झलक रहा है।)

अरुण (अपने आप से, धीरे से): अब क्या होगा मैंने गणित के पेपर के लिए बिल्कुल भी तैयारी नहीं की मैं पेपर में क्या लिखूं।

(उसकी आवाज में घबराहट है वह अपने आस पास इधर उधर देखता है लेकिन कोई भी छात्र उसकी मदद नहीं करता।)

(थोड़े समय बाद सपना बदल जाता है सपने में अरुण की आँखें बंद हैं, और उसे एक अस्पष्ट और गूंजती हुई आवाज आती है)

आवाज (घंटे जैसी गूंज): हम आ रहे हैं... हम तुम्हारे जीवन का हर एक पहलू अच्छे से जानते हैं। जैसे इस जीवन का उद्देश्य क्या है? ऐसे प्रश्न जो तुम्हे बार बार परेशान करते हैं।

(अरुण चौंकते हुए एकदम से जागता है, उसकी आँखें खुली और शरीर जकड़ा हुआ है। कुछ समय बाद अरुण अपने आप को हिलाता है, और बिस्तर से उठ जाता है। दिल की धड़कन बढ़ी हुई है कुछ समय के लिए वह सपने और हकीकत में अंतर महसूस नहीं कर पाता)

(असहज महसूस करते हुए अरुण अपनी मां के पास जाता है)

अरुण (घबराहट में):

मां, मैं... मैं जब सो रहा था तब कोई मुझसे बातें कर रहा था। मां मुझे बिल्कुल भी अच्छा महसूस नहीं हो रहा, लगता है कि मेरे साथ कुछ बुरा हो रहा है।
(उसकी आवाज़ में खौफ़ और असमंजस है।)
माँ(गुस्से में):
बेटा तुम कैसी बातें कर रहे हो कोई भी तुमसे बातें नहीं कर रहा था। क्या तुम फिर से वही भूत-प्रेत वाली बातें करने लगे हो? तुम बड़े हो गए हो, अब ये सब नाटक बंद करो। तुम हनुमान चालीसा का पाठ करो फिर तुम्हे कोई परेशान नहीं करेगा। अरुण(हड़बड़ाते हुए):
नहीं माँ, ये बस... ये एक गहरा षड्यंत्र है, मुझे लगता है कि मोहन ने मुझ पर काला जादू करवा दिया है।
(वह चुप हो जाता है, और फिर अंदर से एक नई चिंता बढ़ती है।)
माँ (धीरे से, सख्त आवाज में):
तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। अगर तुम पर काला जादू किया है, तो हम किसी तांत्रिक को बुलाकर सब ठीक करवा देते हैं।
(अभी वर्तमान में अरुण प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है। उसका मन पढ़ने में नहीं लगता लेकिन वह फिर भी पढ़ने की कोशिश करता है।)
अरुण (मन ही मन):
क्या होगा अगर मेरी जॉब नहीं लगेगी? क्या ये आवाजें सच हैं? मुझसे सपने में कौन बात करता है।
(यह सब सोचते हुए अरुण अपने पास्ट को याद करता है जब उसने रुड़की में इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया था। तब वह बहुत खुश था। लेकिन उसकी खुशी को जल्द ही किसी की नजर लग गई। अरुण अपने पास्ट को याद करते हुए उसमें खो जाता है।अरुण को उस दिन की यादें आंखों के सामने दिखाई देती है जब वह रुड़की में इंजीनियरिंग कर रहा था।) (फ्लैशबैक - रुड़की सुबह का समय)
(रुड़की में अरुण अपने कमरे के भीतर एक कुर्सी पर बैठा है। आंखें आंसुओं से भरी हुई, और चेहरे पर गहरी उदासी की छाया। वह बैठ कर अपने बचपन से लेकर इंजीनियरिंग तक के सफर को याद कर रहा था– इंजीनियरिंग कॉलेज, दोस्त, उम्मीदें – सब अब एक धुंध में गुम हो गए हैं।)
अरुण (धीरे-धीरे, टूटी आवाज़ में):
"मैं सभी के लिए कितना अच्छा सोचता हूं लेकिन कोई भी मुझ से अच्छा व्यवहार नहीं करता। मैं अच्छा करना चाहता था… लेकिन अब कुछ समझ नहीं आता क्या करूं सब लोग मेरे विपरित हो गए हैं।"
(वह अपने आंसुओं को रोकता है। उसकी आँखें फिर से भीगने लगती हैं। यादें फिर ताज़ा हो उठती हैं, उन दिनों की जब बचपन एक भारी बोझ लगता था।)

(अरुण जब कक्षा आठ में था तब का एक दृश्य उसकी आंखों के सामने चमकता है — रसोई का एक कोना, जहाँ वह कॉपी लेकर बैठा था। उसकी मां गुस्से से चिल्ला रही थी)
माँ (क्रोध में):
" उस वैज्ञानिक का नाम बता जिसने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत लेकर आया था?" अरुण (डरा हुआ):
"न्यूटन"
मां(क्रोध में)
"बोल!... उस वैज्ञानिक का नाम बता जिसने टेलीविजन की खोज की"
(अरुण थरथराते हुए मौन हो गया)
(अरुण की माँ ने बिना कुछ कहे चूल्हे में जलता हुआ लाल चिमटा उठाया और अचानक उसका गर्म सिरा अरुण के गाल पर रख दिया।)
अरुण (चीखते हुए):
"आअहहह!"
(गाल पूरी तरह जल चुका है। वह दर्द से कराह रहा है, मगर मां की आंखों में कोई नरमी नहीं।)
माँ (सख्त स्वर में):
"अब तुम्हे वैज्ञानिक के नाम याद रहेंगे। अगर तू पढ़ेगा तब ही तो समझ में आएगा।" (कुछ देर बाद दरवाज़े पर दस्तक हुई। बाहर से चार लोग दाखिल हुए – गांव से आए हुए ममेरी बहने। उनमें से बहन – दामिनी – अरुण से कुछ साल बड़ी थी। उसकी आंखों में आते ही चिंता फैल गई।)
दामिनी (चौंककर):
"अरे अरुण को क्या हुआ? गाल जल गया है क्या इसका!"
(वह झुककर अरुण को उठाती है, उसके बालों पर हाथ फेरती है।)
दामिनी:
"बुआ, आपने इसे मारा?"
अरुण की माँ (गंभीर और सख्त):
"हाँ, मैंने उसके गाल पर गर्म चिमटा रख दिया। ये अपनी कॉपी में लिखे वैज्ञानिकों के नाम याद नहीं कर पाया।
दामिनी (हैरानी से):
"पर बुआ, उसे तो अपना पूरा पाठ के प्रश्न उतर याद है। पिछली बार जब हम आए थे तो उसने पूरा पाठ मुझे सुनाया था। आपने सिर्फ एक वैज्ञानिक के नाम को याद न कर पाने के लिए अरुण के चेहरे पर गर्म चिमटा रख दिया।

अरुण की माँ (जवाब में, जैसे खुद को सही ठहरा रही हो):
"मैंने वही पूछा था जो कॉपी के पहले पन्ने पर लिखा है। अगर पहला पन्ना ही याद नहीं रहेगा, तो परीक्षा में क्या लिखेगा? अब गलती की है तो सज़ा भी मिलेगी।"
अरुण (धीरे से, टूटी आवाज़ में):
"मुझे याद था... पर माँ ने पूछा था कि कॉपी के पहले पन्ने पर कौन-कौन से वैज्ञानिकों के नाम लिखे हैं... मुझे वह याद नहीं आया... क्यों कि वह हमारे सिलेबस में नहीं है।"
(धीरे धीरे यह बात गांव में फैल गई गांव वालों ने भी मां का ही पक्ष लिया।) रिश्तेदार:
"अरे अच्छा किया बहन जी ने। जब पढ़ाई नहीं करेगा तो यही होगा। जब हमारे बच्चे भी पढ़ाई नहीं करेंगे तो हमें भी उनके साथ यही करना चाहिए। तभी तो बच्चे सुधरेंगे।" अध्याय 2 धुंध के उस पार
(अपनी इन पुरानी यादों के बाद अरुण के आंसू थम नहीं रहे थे, उसकी आँखों में बरसों का जमा दर्द और असमर्थता झलक रही थी। वह कुर्सी से उठकर शीशे के सामने खड़ा हो जाता है। उसकी आँखों में कॉलेज की छायाएँ फिर से ताजगी से उभरने लगती हैं। उसे अपने इंटर कॉलेज के वो दिन याद आने लगते हैं, जब बच्चे उसकी शालीनता देखकर उसे 'हिजड़ा' कहकर चिढ़ाया करते थे। उन शब्दों की आवाज आज भी उसके मन में ताज़ा है।") अरुण (अरुण शीशे के सामने धीरे से फुसफुसाते हुए):
"नहीं... तुम सब झूठे हो मैं हिजड़ा नहीं हूँ..."
(अरुण कुछ क्षण बिना किसी हलचल के शीशे के सामने शांत खड़ा रहता है वहा ध्यान से अपने आप को देखता है। फिर उसके मन में भीतर से एक कर्कश आवाज़ आती है—)
मन की आवाज़:
"तू हिजड़ा ही है...तुझे कोई पसंद नहीं करता तू इस धरती पर बोझ है।"
(अरुण के चेहरे के भाव एकाएक बदल जाते हैं वह अपने भीतर की आवाज से संदेह से भर जाता है। वह हिजड़ा नहीं बल्कि एक पुरुष है। लेकिन दूसरों के किए गए कटाक्ष से आज वह अपने आप को जांच रहा है। वह अपने दुखों से पूरा टूट चुका है अब वह उन आवाजों और वास्तविकता के बीच भेद नहीं कर पाता।)
अरुण (संशय और पीड़ा में):
"नहीं... नहीं! मैं हिजड़ा नहीं हूँ...और मैं धरती का बोझ नहीं हूं। मैं जरूर एक दिन बड़ा काम करूंगा और अपने देश के साथ अपना नाम रोशन करके तुम सबको सबक सिखा दूंगा।" (वह आवाज अरुण के मन में गूंजती है और वह अचानक दहाड़ कर रो पड़ता है। उसके घुटनों में अब खड़े रहने की जान नहीं बचती और वह फर्श पर गिर पड़ता है। आँसू बहते हैं, सिसकियाँ उसके पूरे शरीर को झकझोर देती हैं। तभी, उसके भीतर कहीं से एक उम्मीद उठती है —वह घसीटते हुए मोबाइल तक पहुँचता है। काँपते हाथों से वह अपने पुराने इंटर कॉलेज के दोस्त विभात का नंबर डायल करता है।)

अरुण (कमज़ोर आवाज़ में):

"विभात... मुझे नहीं पता मेरे साथ क्या हो रहा है कुछ अजीब घटनाएं हो रही हैं यार... मैं ठीक नहीं हूँ..."

(विभात कहता है अपनी बकवास बंद कर मेरे पास तेरी बकवास सुनने का समय नहीं है। उधर कुछ हलचल होती है। विभात अपने फोन को अपने दोस्त के पास दे देता है और उससे कहता है कि इसे गाली दो। फिर एक अनजान आवाज़ आती है, हँसी के साथ कटीली बात कहती है।)

विभात का दोस्त (मजाक उड़ाते हुए):

"अबे ओ, ये वही अरुण है ना? जो हमें बाज़ार में मिला था चल मैं ही बात करता हूं उससे, आज इसे जमकर गाली दूंगा... बहुत फ़ालतू है ये।"

(गाली देकर विभात फोन काट देता है। अरुण की आँखें भर जाती हैं। आज विभात और उसका दोस्त उसे बाज़ार में मिले प्रभात के दोस्त ने अरुण के कपड़े फोन और कॉलेज का खूब मजाक उड़ाया। वह ज़ोर-ज़ोर से हँसता है, और उस हँसी में प्रभात की भी आवाज़ मिलती है। अरुण का दिल में कुछ टूट जाता है।)

(उसने कभी किसी को पलटकर गाली नहीं दी थी। वो अपशब्द सुनकर भी चुप रहता था। दुनिया ने उसकी शालीनता को उसकी कमज़ोरी बना डाला था।)

(थोड़ी देर बाद अरुण हिम्मत जुटाकर अपने एक और पुराने दोस्त कमल को कॉल करता है। लेकिन...)

कमल (ठंडी और सख्त आवाज़ में):

"अरुण, सुनो... इस बार कॉल कर दिया, ठीक है। अगली बार इस नंबर पर कॉल मत करना। मैं तुम से बात नहीं करना चाहता"

(फोन कट जाता है। अरुण अपनी किताबों के सामने खाली कमरे में बैठा है, अरुण बाहर देखता है तो खिड़की के बाहर धुंध फैली है, जैसे आज उसका ही मन धुंधला हो रहा हो। जिन दोस्तों के साथ उसने अपनी ज़िंदगी के सबसे कठिन पल बाँटे थे, वो अब उसकी आवाज़ भी नहीं सुनना चाहते।)

(मोबाइल पर फिर से रिंग बजती है। स्क्रीन पर आशीष का नाम उभर कर आता है।)

अरुण (कांपते स्वर में):

"ह-हैलो?"

आशीष (घबराई हुई आवाज़ में):

"अरुण... मेरे साथ कुछ बुरा हो रहा आज मेरे कमरे में वासव का भूत आया था। मैंने आज आत्मा देखी... वो पुराने दोस्त वासव की आत्मा थी जिसने हाल ही में आत्महत्या की थी। वो मेरे दरवाज़े पर खड़ा था... उसकी आँखें... अरुण, उसकी आँखें मुझे घूर रही थीं..."

(अरुण चौंकता है, लेकिन वह चुप रहता है। आशीष की घबराई हुई हालत देख कर वो अपना दर्द आशीष से नहीं बाँटता। अपनी हालात के वजह से अरुण उसे अच्छी राय भी नहीं दे

पाता। उसका मन एक पल के लिए हँसने लगता है—एक थकी हुई, अंदर ही अंदर टूटती हुई हँसी के साथ अरुण फोन काट देता है।)

अरुण (मन में):

"आत्मा... लोगों को भूत कैसे दिख जाते हैं मुझे क्यों नहीं दिखते शायद ये उसका मानसिक भ्रम होगा... या शायद अकेलापन और नशे के वजह से वह भूत देखने लगा है l"

(अरुण अपने पुराने इंटर कॉलेज के दोस्त आशीष का भ्रम तो पहचान पा रहा था लेकिन अपनी भीतर के आवाजों को नहीं समझ पाया कि यह भी तो मेरा भ्रम हो सकता है उन्हें वह सच मान रहा था और बिना किसी तर्क के उन पर भरोसा कर रहा था। शायद इसी छोटे से अंतर की नजर अरुण की खुशियों को लग गई या मानसिक स्वास्थ्य की अधूरी जानकारी ने अरुण को भ्रमित कर दिया होगा।)

(आज दोपहर की धूप कमरे की दीवार पर अतीत की एक धुंधली सी लकीर बना रही थी। जिसमें अरुण खोया जा रहा था। अरुण अकेला बैठा था। खाने की थाली उसके सामने पड़ी — चावल, दाल, और सब्ज़ी... जैसा भोजन वह हर दिन करता था।)

(उसने खाना शुरू ही किया था कि उसके भीतर एक जानी-पहचानी मगर भयावह आवाज़ आई।)

मन की आवाज़ (धीमी और खुरदरी):

"तू खाना मत खा। तेरे पिताजी ने दुकान वाले को धीमा ज़हर दिया है... वो तेरे राशन में मिलाकर तुझे देता है..."

(अरुण का हाथ अचानक से रुक गया। उसके चेहरे पर भय नहीं था — सिर्फ़ एक अजीब-सी सहमति थी। जैसे उसे अहसास हो रहा हो कि ऐसा कुछ भी हो सकता है।)

(उसने थाली को धीरे से किनारे कर दिया। भूख से ज़्यादा अब उसे अपने भीतर की आवाज पर संदेह हो रहा था। लेकिन कोई उसका साथ नहीं दे रहा था जिससे वह अपने संदेह को पुष्ट कर सके इसलिए वह उन आवाजों में डूबता जा रहा था।)

अरुण (मन में):

"क्या ये मेरे मन के भीतर की आवाजें सच है? मैं इन आवाजों पर इतना विश्वास क्यों किए जा रहा हूं?

क्या... कोई मुझसे प्यार नहीं करता, क्या कोई मेरी भावनाओं को कभी नहीं समझ पाएगा?"

(अरुण बिस्तर से उठा और खिड़की की ओर चला गया। बाहर उसके कमरे के बगल में ही एक मकान का काम चल रहा था वो अपने लिए जमीन में पानी की तलाश कर के उस जगह ड्रिल से खुदाई कर रहे थे। मगर वह बाहर की किसी भी आवाज से कटा हुआ लग रहा था — जैसे उसकी चेतना का धागा अब अपने भीतर की आवाज में ही वास्तविकता देख रहा हो। यह धागा अब भीतर के आवाज के इर्द गिर्द घूमता है ऐसा लग रहा है मानो समाज से उसका संबंध टूट चुका हो।)

अध्याय 3 धुंध में बसी स्मृतियां

(खिड़की के बाहर देखते हुए अरुण की आँखों में एक गहरी बेचैनी तैर रही थी। खिड़की के बाहर धुंध थी... वैसी ही धुंध, जैसी अरुण के मन में थी। आज उस धुंध ने उसे फिर अपने वर्तमान से उठाकर अतीत की यादों में ले गई।)

(फ्लैशबैक – अरुण स्कूल के दिनों में)

(अरुण को कक्षा 9 का वो साल याद आया। जब वह पहली बार अपने गांव से निकलकर कस्बे में, अपनी बुआ के घर पढ़ने गया था। नया माहौल, नए लोग, लेकिन अतीत का एक साया जो दबे पांव उसके साथ चल रहा था।)

(जब अरुण कक्षा 6 में था उसके जीवन में अजीब घटनाएं घटने लगी थीं। अरुण की मां कोमल पर उसके नाना की आत्मा आ जाती थी। वह अपना सिर हिलाते हुए कहती की नाना कुछ कहना चाहते हैं — वह अरुण के पिता चंद्रमोहन से नाराज़ हैं, क्यों कि वह शराब पी कर अरुण की मां को परेशान करता है वह आत्मा अरुण के परिवार को आशीर्वाद देना चाहती है। अरुण के लिए यह सब घटनाएं वास्तविक थी।)

(अरुण के कक्षा 7 में आते ही उसकी मां कोमल ने कहना शुरू कर दिया कि अब उन पर कृष्ण और दुर्गा मां की आत्मा भी आती है। वह भविष्यवाणियाँ करतीं, लोगों को भूत-प्रेत से बचातीं — कभी-कभी तो कहतीं कि एक नकारात्मक शक्ति का दल बादल उनके गांव की ओर बढ़ रहा है, जिसे वह अपने दैवीय शक्ति से गांव की सीमा से ही लौटा देती हैं।)

(अरुण तब बच्चा था। उसे मां की ये शक्ति ईश्वर का वरदान लगती थी।)

लेकिन...

(उसी घर में एक दूसरा चेहरा भी था — उसका पिता। शराबी, उग्र। हर रात शराब पीकर आना, फिर उसके माता-पिता के बीच लड़ाई फिर वही चीखें, वही चिल्लाहटें। गांव के लोग आते अरुण की मां पर आत्माएं आती चंद्रमोहन सबके सामने माफी मांगता और फिर से वही काम करता। कोमल फिर से चंद्रमोहन से कहती की जितना तू मुझे सता रहा है उतना ही नर्क के दूत तुझे दंड देंगे। अरुण चुपचाप बाहर बैठकर ये सब सुनता रहता। उसके भीतर एक ज्वालामुखी सा जमा होता जाता — बिना आवाज़ के।)

(कई सालों तक ये चला। मगर जब अरुण कक्षा 9 में पढ़ने के लिए कस्बे में चला गया, उसके कुछ दिनों बाद कुछ बदल गया। एक लंबे देवी देवताओं और लड़ाई के संघर्ष के बाद उसके पिता ने अचानक शराब छोड़ दी। शायद अब अरुण का पिता चंद्रमोहन भी उस लंबे संघर्ष से ऊब गए होंगे। इसमें उन तीनों आत्माओं की अहम भूमिका रही जब चंद्रमोहन शराब पीकर घर आता तो वो आत्माएं अरुण की मां कोमल की तबीयत और व्यवहार बिगाड़ देते। यह भी अरुण को समझ नहीं आया कि जब उसके पिता शराब पीकर घर आते हैं तो उसकी मां की तबीयत क्यों बिगड़ जाती है।)

(एक बार, जब अरुण छुट्टियों में घर लौटा — उसकी माँ-पिता से किसी बात पर बहस हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि अरुण की माँ कोमल पर देवी माँ की आत्मा आ गईं। फिर... कोमल उठीं, भीतर गईं और देवताओं की छोटी कुल्हाड़ी ले आईं। वह लोहे की चमकती हुई कुल्हाड़ी जिसे अरुण हमेशा आदर से देखा करता था।)

(कोमल की आँखें लाल थीं, जैसे आज वह अपनी शक्ति से एक राक्षस का वध करना चाहती हो। चेहरा गुस्से से तप रहा था। उन्होंने कहा —)

कोमल(देवी के रूप में, गुस्से से):

"इसने देवी मां का अपमान किया है! इसे दंड मिलेगा!"

(अरुण हक्का-बक्का रह गया। एक पल के लिए वह बिना हिले कोमल के व्यवहार में आए बदलाव को देखने लगा। उसने कुछ भी नहीं किया था — सिर्फ़ अपनी बात रखी थी। फिर भी

देवी मां की आत्मा उसे दंड देना चाहती थी। माँ उसके पीछे दौड़ीं, कुल्हाड़ी हवा में लहराई। अरुण डर के मारे काँप गया। वह जानता था कि माँ अब अपना आपा खो चुकी हैं — और वह देवी मां की आत्मा के वश में है।)

(डर के मारे अरुण ने अपने बचाव के लिए कुल्हाड़ी का हत्था पकड़ लिया। तभी पिता बीच में कूदे और उसे धक्का दिया।)

पिता (घबराए स्वर में):

"भाग! भाग यहां से! यहां मत रुक!"

(अरुण दौड़ पड़ा, आँखों में आंसू और दिल में घबराहट लिए। पीछे से माँ की चीख आई — उन्होंने कुल्हाड़ी से अपना ही हाथ काट लिया था।)

(अरुण दूर से सब देखता रहा। उसके मन में सब हलचल बन्द हो गई। कुछ समय तक वह चुपचाप कांपता रहा फिर उसने सोचा — क्या सच में दुर्गा मां मुझसे नाराज़ थीं? क्या मां दुर्गा मुझे बिना कारण दंड देना चाहती हैं? क्या मैंने कोई पाप किया था? क्या मेरी माँ अब मुझसे प्यार नहीं करतीं? वह मुझे मारना चाहती है?)

(आज, शहर में खिड़की के पास खड़ा अरुण वही दृश्य फिर से देख रहा था। उसकी माँ की मनोविकृति, पिता का उन्माद, और कुल्हाड़ी की धार — सब कुछ उसी तरह ताज़ा था, जैसे वो घटना आज ही हुई हो।)

अरुण (मन में, भारी स्वर में):

"मैंने कोई गलती नहीं की थी... मैंने सिर्फ़ खुद को बचाया था। लेकिन माँ... माँ ने मुझे मारने की कोशिश की?"

(उसकी आँखें भर आती हैं। वह वापस अपनी कुर्सी पर बैठता है, लेकिन मन उसी धुंध में उलझा रहता है। शायद वह जानता है — यह कहानी अभी पूरी नहीं हुई है।)

(अरुण को भूख लगने लगी। उसने उस आवाज की वजह से आज सुबह से कुछ नहीं खाया था। वह उस आवाज के विषय को भूलकर कुछ खाने की सोच ही रहा था कि उसके भीतर से फिर वही भयावह आवाज गूंज उठी—)

मन की फिर से वही आवाज (धीमी, सख्त और दृढ़):

"तू अपने रसोई का खाना बिल्कुल मत खा। क्या तू भूल गया तेरे पिता चन्द्र मोहन ने पास के दुकान वाले को धीमा ज़हर दिया है। जिसे वो तेरे राशन में मिलाकर तुझे देता है। वह तुझे धीरे-धीरे मारना चाहता है।"

(अरुण का शरीर सिहर उठता है। अब अरुण का उस आवाज पर यकीन बढ़ता ही जा रहा था। उसे लगता है यह सच है। अरुण की आँखों में अब भूख नहीं, डर था।)

(वह वहाँ से उठकर धीरे-धीरे अपने कपड़े धोने के लिए बाल्टी की ओर बढ़ता है, लेकिन तभी वह आवाज़ फिर से आती है। अब और भी स्पष्ट, जैसे आदेश दे रही हो—)

मन की आवाज:

"अगर तुझे इस ज़हर से बचना है... अगर तुझे ज़िंदा रहना है, तो अनार का रस पीने बाज़ार जाओ। हम उसी में तुझे अमृत की एक बूंद देंगे।"

(अरुण कुछ क्षण तक ठहरता है। उसके कदम रुक जाते हैं। वह मन में सोचता है—)
अरुण (मन में):
"पर... मेरे पास पैसे नहीं हैं। जूस कैसे खरीदूंगा?"
अध्याय 4 धुंध की परतें
(सुबह के ग्यारह बजे हैं। अरुण अपने कपड़ों की बाल्टी को छोड़कर बाथरूम से बाहर निकल आया। शरीर में हल्का कंपन हो रहा है। चेहरे पर भूख और थकावट, पर उससे भी ज़्यादा एक विचित्र बेचैनी है। उसके भीतर की फुसफुसाहट भरी आवाज और भी स्पष्ट हो चुकी है। अब वह आवाज़ उसे जैसे कोई आश्वासन दे रही हो।)
मन की आवाज़ (धीरे और गंभीर):
"तुम पैसे की चिंता मत करो हम किसी को भेज देंगे। वह तुम्हारे पास आएगा... और तुम्हारा पूरा उधार चुका देगा।"
(आवाज को सुनकर अरुण थोड़ी देर स्तब्ध खड़ा रहता है। फिर उस आवाज पर बिना संदेह किए वह अपनी पुरानी नीली साइकिल पर सवार होकर बाजार की ओर जाता है। रास्ते में वह आवाज़ें फिर शुरू हो गई — वो आवाज अंदर से बोलती हैं, जैसे कोई उसके साथ लगातार संवाद कर रहा हो।)
मन की आवाज़:
"अरुण... तू बहुत प्रसिद्ध है आज हर कोई तेरा नाम जानता है। टीवी पर तेरी खबर चल रही है।"
अरुण (मन में, उलझन से):
"मैं... प्रसिद्ध? लेकिन क्यों?"
(उसकी साइकिल की चेन चरमराती है,अरुण एक क्षण को साइकिल रोकता है। लेकिन उसके मन में अब केवल वही आवाज़ गूंज रही है। मानो उसे हर सवाल का जवाब आता हो। अरुण की धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। वह चारों ओर देखता है। लोग अपनी ही दुनिया में व्यस्त हैं, उसे कोई नहीं देख रहा।)
मन की आवाज़ (धीरे, शांत भाव से):
"अरुण तुमने एक ऐसी चीज़ खोजी है। जिसे दुनिया ने अब तक कभी नहीं देखा था।"
अरुण (काँपते होंठों से):
"मैंने क्या खोजा...? मुझे कुछ याद नहीं आता।"
मन की आवाज़:
"याद आ जाएगा। वक्त आने दो। तुमने जो खोजा है, उसकी जानकारी अभी तुम्हारे भीतर बंद है। लेकिन आज रात... प्रधानमंत्री स्वयं तुमसे मिलने आएंगे। वो तुम्हारी खोज के लिए तुम्हें राष्ट्रीय सम्मान देने वाले हैं।"
(अरुण की सांसें तेज़ हो जाती हैं, वो अपने माथे से पसीना पोंछता है और वह साइकिल को सीधे जूस की दुकान के पास खड़ी कर देता है।)

(अरुण दुकान के अंदर दाख़िल होता है। दुकान के अंदर हल्की महक है, अनार, संतरे और कीनू की मिली-जुली खुशबू हवा में घुली हुई है। जूस की मशीन की हल्की-हल्की घरघराहट के बीच टीवी पर एक शोरगुल भरा न्यूज़ डिबेट शो चल रहा है। एंकर चिल्ला रहा है, कुछ नेता एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। अरुण ध्यान से स्क्रीन पर देखता है। वह उम्मीद करता है कि शायद वहाँ उसका नाम हो...)
(लेकिन वहाँ उसे अपना नाम नहीं मिलता। वहां पर और ही राजनीतिक मुद्दे पर चर्चा हो रही है।)
(जूस वाला, यूसुफ भाई, सिर पर सफ़ेद टोपी और चश्मा लगाए। अरुण को ध्यान से देखता है, फिर एक अजीब टिप्पणी करता है।)
जूस वाला (कुछ तीखेपन से):
देख रहे हो तुम्हारे लोग... तुम हिंदू लोग हम से बहुत लड़ते हो। हर बात में झगड़ा। (अरुण उस बात को अनसुना कर देता है। वह यूसुफ की उस बात पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। मगर उसके चेहरे पर हल्का-सा दुख उभर आता है। टीवी पर उसकी खबर नहीं चल रही थी, ये बात कहीं गहरे उसे चुभ गई।)
अरुण (धीमे स्वर में):
"यूसुफ भाई... उधार में एक अनार का जूस मिल जाएगा क्या?"
(यूसुफ उसे घूरता है, फिर एक लंबी सांस लेता है।)
यूसुफ (गंभीर लहजे में):
"इस बार उधार... चलो, दे देता हूँ।"
(वो मशीन में अनार के दानों को डालता है। आवाज़ होती है — कुछ पिचके हुए बीज, कुछ रस, और एक गाढ़ा लाल तरल।)
(जूस अरुण के सामने आता है। अरुण गिलास उठाता है, एक घूँट पीता है... फिर दूसरा.. और फिर पूरे जूस को पी जाता है। अरुण जूस की मिठास में कुछ खोज रहा था लेकिन उसे गिलास में एक अनार का दाना मिलता है।)
अरुण धीरे से मन में (धीरे, उत्साहित लहजे में):
"क्या ये वही है... अमृत की बूंद। ये मेरे लिए भेजा गया है... इसे खा लूं या नहीं।" (अरुण आगे बिना सोचे बीज को निगल जाता है। एक क्षण के लिए कुछ नहीं होता... फिर उसे विश्वास हो जाता है कि वह सौ वर्ष के लिए अमर हो गया और अब उस पर जहर का असर नहीं होगा।)
अध्याय 5 कमरे की चुप बिखरी किताबें
अरुण (मन में फुसफुसाते हुए):
"अब मैं अमर हूँ... अब कोई ज़हर, कोई बीमारी, कोई दुःख मुझे छू नहीं सकता।"
(उसके चेहरे पर एक शांति थी— वह शांति उसे सुकून नहीं दे रही थी, बल्कि वह शांति उसके गहरे भ्रम से उपजती है।)

भोजन की ओर यात्रा
(अनार का रस पीने के बाद अरुण को अपना शरीर हल्का और पेट अब पहले से और ज़्यादा खाली महसूस हो रहा था। उसे भूख लग रही थी। लेकिन इस भूख को अब केवल रोटी नहीं मिटा सकती थी — यह मान्यता की, सम्मान की, और उस अमरत्व के पुरस्कार की भूख थी, जो उसे अभी-अभी मिला था।)
(वह सीधे उस छोटी भोजनालय की ओर गया, जहाँ वह कभी-कभी उधार पर भोजन खा लिया करता था।)
भोजनालय में अपमान
(अरुण धीमी चाल से भोजनालय में दाखिल हुआ। वहाँ की दीवारें अब उसे छोटी लग रही थीं, जैसे वह इस जगह से कहीं बड़ा हो गया हो।)
अरुण (आवाज़ साधकर):
"भैया... शाही पनीर मिल जाएगा क्या? उधार में..."
(भोजनालय का मालिक उसे बिना देखे अंदर बैठने के लिए कहता है।)
(अरुण के भीतर वही आवाज़ फिर से उसके मन में गूंजती है — यह आवाज़ अब पहले से अधिक दृढ़ और अधिकारपूर्ण हो चुकी थी।)
मन की आवाज़:
"एक प्लेट नहीं, दो मांगो।"
अरुण (धीरे मगर आत्मविश्वास से):
"दो प्लेट शाही पनीर दे दो।"
(अब मालिक अरुण की ओर देखता है। उसकी आँखों में हल्का-सा संशय है।)
मालिक (गंभीरता से):
"तेरे जैसे लोग आते हैं, खाते हैं और फिर ग़ायब हो जाते हैं। अब निकल यहाँ से। पैसे लेकर आना तब खाना मिलेगा।"
(यह सुनकर अरुण को एक झटका लगा लेकिन भीतर की आवाज उसे अभी भी विश्वास दिलाती है कि यह भोजनालय वाला जैन है इसलिए तुम्हें भोजन नहीं दिया तुम अब इसके रेस्टोरेंट में मत जाना। लोगों की हँसी अरुण को एकदम ठोस और भारी लगने लगती है। लेकिन अब वह टूटता नहीं। वह सीधा अपने कमरे की ओर लौटता है।)
कमरे की ओर वापसी
(अपमान और भूख से थका हुआ अरुण अपने कमरे की ओर लौटा। भीतर अब भी वही आवाज़ उसे राह दिखा रही थी — शांत, लेकिन अडिग।)
अरुण (दरवाज़े पर खड़े होकर):
"आंटी... दो सौ रुपए चाहिए। बहुत ज़रूरी है। एक दो दिन में लौटा दूँगा।"

(आंटी दरवाज़े से झाँकती हैं। कुछ देर अरुण को देखती हैं — उसकी आँखों में अजीब-सी चमक है जैसे उसे यह बात पहले से ही पता हो कि अरुण उनसे उधार मांगेगा, बिना कुछ कहे वह अंदर जाती हैं और ₹200 उसकी ओर बढ़ा देती हैं।)
भोजन और जूस
(अरुण सड़क के किनारे लगे ठेले से पूड़ी-सब्ज़ी खरीदता है। जल्दी-जल्दी खाता है — जैसे हर कौर के साथ वह अपने भीतर की किसी और भूख को शांत कर रहा हो।)
(बचे हुए पैसों से वह एक ऐलोवेरा के रस की बोतल खरीदता है। बोतल को देखते हुए उसकी आँखों में अजीब-सी चमक लौट आती है।)
अरुण (मन में फुसफुसाते हुए):
"अब मेरा जीवन व्यर्थ नहीं है... अब मैं कुछ बड़ा करने को तैयार हूँ।"
कमरे में विश्राम और बेचैनी
(अरुण कमरे में लौटकर बिस्तर पर लेट जाता है। उसके चेहरे पर संतोष का एक झूठा आवरण है, लेकिन भीतर बेचैनी है।)
(रात भर वह करवटें बदलता है — नींद जैसे उससे रूठ गई हो। सुबह की रोशनी भी उसे नहीं जगा पाती। वह दोपहर तक सोता रहता है, कॉलेज जाना भूल चुका है, या शायद अब उसे ज़रूरत ही नहीं लगती।)
शाम का आगमन
(शाम के वक़्त हलचल होती है — नीचे सड़क पर एक सफेद गाड़ी आकर रुकती है, जिस पर "आयुर्वेद चिकित्सक" लिखा होता है। लोग जुटते हैं, लेकिन अरुण खिड़की से चुपचाप देखते रहता है।)
बाहरी आहट और अजनबी आवाज़
(अचानक कोई दरवाज़ा खटखटाता है। अरुण चौंकता है। दरवाज़ा खोलता है तो बाहर एक लड़की खड़ी होती है। साधारण कपड़े, लेकिन आँखों में कुछ जानने की ललक।)
लड़की (मुस्कराते हुए):
"हाय, तुम अरुण हो न?"
अरुण (सावधानी से):
"तुम कौन?"
लड़की:
"मैं... काव्या।"
(अरुण कुछ कहता नहीं, बस उसकी ओर देखता रहता है।) काव्या (हल्की मुस्कान के साथ):
"मैं आपके पड़ोस में ही रहती हूँ।"
अरुण (थोड़ा चौंकते हुए, संदेह में):

"पर मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा..."
काव्या (नज़रें मिलाते हुए, धीमे से):
"शायद आपने देखा नहीं... या देखना नहीं चाहा।"
(अरुण कुछ पल के लिए चुप रहता है। वह पहली बार थोड़ा असहज महसूस करता है।)
अरुण (धीरे से):
कुछ काम था?
काव्या:
"नहीं... बस यूँ ही।तुम बहुत अकेले रहते हो तो लगा तुमसे बात करनी चाहिए।"
(उसकी आवाज़ में ना सहानुभूति, ना दया थी.. बस एक सीधी, सच्ची उपस्थिति। अरुण को लगता है जैसे उसके भीतर का ज्वालामुखी हिलने लगा हो। उसे कोई दोस्त मिल गया जिससे वह अपने दुखों को बांट सके।)
काव्या (थोड़ा संकोच के साथ):
"अगर बुरा न मानो तो... अंदर आ जाऊँ?"
(अरुण थोड़ी देर चुप रहा। उसे आदत नहीं थी कि कोई उसके कमरे में आए। लेकिन उसके सिर ने खुद-ब-खुद 'हाँ' में हल्की-सी झलक दी।)
(काव्या अंदर आई। कमरे की हवा कुछ पल के लिए जैसे ठहर गई। किताबें फटकर बिखरी थीं, अरुण के हाई स्कूल और कॉलेज के रिजल्ट का कोना जला हुआ था, मेज़ पर अधखाली ऐलोवेरा की बोतल रखी थी। कमरे में अकेलेपन की अजीब-सी गंध थी।
काव्या (धीरे से, चारों ओर देखते हुए):
"तुम्हारा कमरा... बहुत कुछ कहता है।"
अरुण (थोड़ा हँसने की कोशिश करते हुए):
"अक्सर किताबें बोलती हैं, पर अब ये सब चुप हैं, ये बहुत शोर कर रहे थे मैंने इन्हें चुप करा दिया।"
(काव्या चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ जाती है, जो शायद पिछले कुछ दिनों से इस्तेमाल में नहीं आई थी। धूल हल्की उड़ती है। लेकिन अरुण के भीतर न कोई घबराहट थी, न शिकायत।)
काव्या:
"तुम्हें जानकर अजीब लगेगा, लेकिन मैं अक्सर सोचती थी... इस कमरे में क्या चलता होगा। आज समझ में आ रहा है — यहाँ बहुत कुछ ठहरा हुआ है।"
(अरुण उसे देखता है। पहली बार किसी ने उसके कमरे को, उसके अस्तित्व को बिना मूल्यांकन के स्वीकार किया है।)
(भीतर की आवाज़, जो हमेशा आदेश देती थी, आज चुप थी। शायद वह भी सुन रही थी।)

अरुण (धीरे से, जैसे खुद से कह रहा हो पर काव्या को सुनाना भी चाहता हो):
"यहां किताबों की लाशें बिखरी हुई हैं जिन्हें मैं शायद जला नहीं पाया। किसी ना किसी को तो इन किताबों के लाशों के ऊपर से गुजरना होगा।
अध्याय 6 शीशे में प्रधानमंत्री
(काव्या धीरे-धीरे कमरे को चारों ओर से निहारती है। उसकी नज़र अलमारी की ओर जाती है, जहाँ कबीर पंथी गुरु की एक तस्वीर लगी है। उसके पास एक छोटी सी चारनामृत की बोतल रखी हुई है। खिड़की के पास कृष्ण और राधा की एक तस्वीर भी रखी हुई है।) काव्या (धीमे स्वर में):
"अरुण तुम इन किताबों से इतना दुखी क्यों हो? आखिर तुमने इनको कमरे में फाड़ कर क्यों रखा है?"
(अरुण एक पल के लिए खामोश रहता है, फिर उसके व्यवहार में गहरी पीड़ा झलकती है।) अरुण (धीरे से, खुद से लड़ते हुए):
"यहाँ हर किताब के पीछे मेरी हार, मेरी उम्मीदें और टूटे हुए सपने छिपे हैं। ये किताबें मेरे अतीत की आवाज़ें हैं, जो अब मेरे मन में गूंजती हैं। उन्होंने कहा कि अब तुम्हें इन किताबों और रिजल्ट की जरूरत नहीं है। इसलिए मैंने इन्हें फाड़ दिया और अपना हाई स्कूल और इंटर कॉलेज रिजल्ट जला दिया।"
(काव्या उसका दर्द महसूस करती है, उसकी आँखों में सहानुभूति की चमक होती है।) काव्या:
"क्या यही वजह है कि तुमने इन्हें जलाने की कोशिश की? या शायद ये आवाज़ें तुम्हें परेशान कर रही हो, तो तुमने उन्हें चुप करा दिया?"
अरुण (धीरे से):
"मुझे लगा कि अगर मैं इन्हें जला दूं, तो शायद मेरा अतीत भी जल जाएगा और वो मेरे भीतर की आवाज भी नहीं आएगी। लेकिन ये लाशें, ये बिखरी किताबें, अब भी कहीं अंदर तक मुझे अपनी ओर खींचती हैं। इसलिए मैं इन किताबों को जला नहीं पाया। काव्या… एक अदृश्य ताकत भी है… जो मुझे पिछले एक हफ्ते से सोने नहीं दे रही। मुझे अब संदेह है की वो मेरे भीतर की आवाज कहाँ से आ रही है।"
काव्या(एक गंभीर बैचेनी में):
"अरुण कैसी अदृश्य ताकत उनके बारे में थोडा बिस्तार से बताओ वो तेरे साथ क्या करते हैं।"
अरुण:
"जब भी मैं सोने की कोशिश करता हूं वो अदृश्य ताकत मुझे सपने में मारने लगती है। जिससे मेरी नींद खुल जाती है और मैं सुबह के चार बजे तक नहीं सोता हूं फिर मैं कालेज जाने की जगह दिन में अपनी नींद पूरी कर लेता हूं।"

(काव्या इस बात का कोई जवाब नहीं देती। कमरे में एक असहज खामोशी भर जाती है। काव्या अरुण की आँखों में झांकने की कोशिश करती है, लेकिन उसकी नज़र अब आत्म मुग्धता में कहीं खो चुकी है।)
अरुण (आवाज़ में रहस्य और उत्तेजना):
"आज रात... मुझसे प्रधानमंत्री मिलने आ रहे हैं।"
काव्या (चौंकते हुए, संशय से):
"क्या? प्रधानमंत्री? लेकिन क्यों? तुमने ऐसा क्या किया है, अरुण?"
अरुण (गंभीरता से, धीरे-धीरे):
"मैंने एक गुप्त खोज की है, काव्या... ऐसी खोज, जो इस देश का भविष्य बदल सकती है।" (वो एकाएक शीशे की ओर देखता है। उसकी आँखों में चमक और बेचैनी का अजीब मेल है। अरुण शीशे की ओर देखते हुए काव्या से कहता है देखो प्रधानमंत्री की वीडियो कॉल आ रही है। अरुण अब शीशे से बात करने लग जाता है।)
अरुण (शीशे से बात करते हुए, जैसे किसी और से संवाद कर रहा हो):
"हाँ... मैं तैयार हूँ। काव्या प्रधानमंत्री जी रास्ते में हैं। वो जल्द ही कुछ घंटों में यहां पहुंचने वाले हैं।"
काव्या (नरम स्वर में):
"अरुण… ये मेरा नंबर है इसे फोन में सेव कर लो। जब प्रधानमंत्री आ जाएँ, तो मुझे कॉल ज़रूर करना। मैं भी उनसे मिलना चाहती हूँ… और तुमसे भी।"
(इतने में, दरवाज़े पर ठक-ठक होती है। दोनों चौंकते हैं। अरुण धीरे से दरवाज़ा खोलता है। सामने मकान मालकिन खड़ी हैं, हाथ में एक थाली है।)
मकान मालकिन (सीधे स्वर में):
"अरुण बेटा, तुम मांस तो नहीं खाते न?
अरुण (धीरे से सिर हिलाते हुए):
"नहीं आंटी, मैं मांस नहीं खाता।"
(अरुण दरवाज़ा बंद करता है और जैसे ही वह पलटता है, कमरे में अब काव्या नहीं है। वह इधर-उधर देखता है — चारनामृत की बोतल वहीं है, कृष्ण-राधा की तस्वीर जस की तस, लेकिन काव्या… एकदम गायब।)
अरुण (धीरे, आश्चर्य में):
"काव्या...? अभी यहीं थी... कहाँ चली गई"
(वो दरवाज़ा खोलकर बाहर झाँकता है, लेकिन गलियारा खाली है। चारों तरफ सन्नाटा।) (रात का समय। अब अंधेरा पूरी तरह फैल चुका है। गलियों में स्ट्रीट लाइट्स की पीली रोशनी बिखरी हुई है। हल्की हवा चल रही है, जो कभी-कभी किसी पुराने कागज को उड़ाकर ले जाती है।)

(अरुण अब अपने घर के बाहर, गेट के पास खड़ा है। उसके चेहरे पर इंतज़ार, उत्तेजना और एक अनकहा भय सब एक साथ हैं।)
अरुण (धीरे से बुदबुदाते हुए):
"बस कुछ ही पलों की बात है… प्रधानमंत्री जी आने ही वाले हैं।"
(वह बार-बार सड़क की ओर देखता है.... लेकिन उसे सड़क खाली ही नजर आती है।)
अध्याय 7 कोई आ रहा है...
(अरुण गेट पर खड़ा है। चारों ओर अजीब सी नीरवता है। दूर कहीं कुत्ते भौंकते हैं, पर कोई आता नहीं।)
अरुण (धीरे से, खुद से):
"कहीं प्रधानमंत्री आने का वक़्त तो नहीं बदल गया?"
(वो जेब से मोबाइल निकालता है और स्क्रीन पर एक नाम टाइप करता है — काव्या। लेकिन स्क्रीन पर लिखा आता है: "No Contact Found.")
अरुण (घबरा कर):
"मैंने तो सेव किया था... कहाँ गई?"
(वो वापस कमरे में आता है। शीशे के पास खड़ा होता है। उसकी आँखें लाल हैं, नींद और उलझन के बीच डोलती हुईं। वह शीशे में देखता है तो इस बार उसे अपना ही चेहरा दिखाई देता है।)
अरुण (धीरे से, खुद से):
"प्रधानमंत्री जी अब वीडियो कॉल क्यों नहीं कर रहे? अभी कुछ समय पहले तो मेरी बात हुई…"
(तभी उसके मन में धीमी, फुसफुसाती हुई आवाज़ आती है —)
रहस्यमय मन की आवाज़:
"कोहरे की वजह से प्रधानमंत्री लेट हो गए हैं... वो आ रहे हैं... थोड़ा और इंतज़ार..."
(अरुण की आँखें चमकती हैं, लेकिन थकावट और नींद ने उसे खोखला कर दिया है। वह रातभर गेट के पास खड़ा रहता है — ऊंघते हुए, सड़क को ताकते हुए। धीरे-धीरे, रात बीत जाती है। मकान मालिक के कमरे में हलचल शुरू हो जाती है। अरुण अपने कमरे में लौट जाता है सुबह की हल्की नीली रोशनी कमरे में फैलती है।)
(अब मौसम साफ है। कोहरा हट चुका है। गली में शोरगुल हो रहा है, दूध वाला साइकल से जा रहा है। लेकिन प्रधानमंत्री नहीं आए। अब एक क्षण के लिए अरुण को उन आवाज और अपने व्यवहार पर संदेह बढ़ने लगता है फिर भी मानसिक बीमारी के प्रति जागरूकता ना होने के कारण उसे लगता है कि कोई शैतान ये सब मेरे साथ कर रहा है। लेकिन फिर भी जब वो आवाज आती तो अरुण उसे फिर से उसके अनुसार चलने लगता।)
अरुण (खुद से, फुसफुसाते हुए):

"ये सब क्या था? क्या कोई शैतान मेरे साथ खेल रहा है?"
(वो ठिठक जाता है। कुछ याद करता है।)
अरुण (घबरा कर):
"दो दिन पहले... मैंने वो गेम खेला था... Quiza Board... क्या उसी से ये सब शुरू हुआ?"
(वह फौरन अलमारी की ओर बढ़ता है। नीचे फेंकी हुई चीजों में अपनी माला ढूंढता है — धूल में लिपटी, लेकिन अब भी चमकती हुई।)
(वह माला उठाकर माथे से लगाता है, और शैतान से बचने के लिए बड़बड़ाता है)
अरुण (तेज़ स्वर में):
"ॐ तत् सत् सतनाम... कबीर साहिब..."
(कुछ देर जाप करने के बाद वह बाथरूम की ओर बढ़ता है। खुद को शुद्ध करने के लिए नहाने चला जाता है। बाहर आकर खुद को एक मोटी, पुरानी कंबल में लपेट लेता है — ठंड अब शरीर में नहीं, चेतना के तल में है।)
(कमरे के कोने में रखी गुरु की तस्वीर के सामने घी का दिया जलाता है। धूप जलाकर, धीमी आवाज़ में आरती गाने लगता है।)
अरुण (आँखें मूंदे, गाते हुए):
"पहली आरती हरि दरबारे, तेजपुंज जहां प्राण उधारे।
पाती पंच पौहप कर पूजा, देव निरंजन और न दूजा।...."
आरती के दौरान उसकी आवाज़ कई बार काँपती है — कहीं डर है, कहीं प्रार्थना, और कहीं आत्मसमर्पण।)
(लेकिन जैसे ही वह आँखें खोलता है, कमरे के बाहर खिड़की के पास हल्की सी परछाई डोलती है — मकान मालकिन चंद्रप्रभा आती है और अरुण से कहती है तेरे पिताजी तुझ से बात करना चाहते हैं। तेरे फोन में नेटवर्क नहीं आ रहा होगा।)
चंद्रप्रभा (धीमे और गंभीर स्वर में):
"अरुण बेटा, तुम्हारे पिताजी ने फोन किया था। तुम्हारा फोन बंद आ रहा था। वो तुम से कुछ ज़रूरी बातें करना चाहते हैं।"
(अरुण अपने बैग से मोबाइल निकालता है, लेकिन नेटवर्क अभी भी नहीं आ रहा।)
(अरुण कंबल में लिपटा बैठा है। उसकी साँसें धीरे-धीरे चल रही हैं। कमरे में धूप और दीए की लौ से हल्की गर्माहट फैली है। वह चुपचाप चंद्रप्रभा की ओर देखता है — और तभी...)
उसके भीतर एक धीमी, मगर साफ़ आवाज़ गूंजती है — मन की आवाज़:
"पिताजी मतलब गुरुदेव... वही जिनके हाथों में सबकी डोर है... वही जो भीतर के सत्य को जानते हैं..."

(अरुण की आँखों में चमक आ जाती है। वह काँपते हाथों से मोबाइल लेता है, जैसे कोई ईश्वरीय संदेश पकड़ रहा हो।)
अरुण(धीमे स्वर में):
हैलो।
(दूसरी तरफ से अपने पिताजी चंद्रमोहन कि आवाज सुन कर उसे बहुत गुस्सा आता है। अरुण सिहर उठता है, जैसे किसी ने उसके भीतर की पवित्रता पर दस्तक दे दी हो।) अरुण (धीरे से, खुद से बुदबुदाते हुए):
"ये... नहीं... ये तो चंद्रमोहन हैं... सांसारिक पिता... पर मेरे असली पिता तो सत्पुरुष हैं...जो कि अब मेरे गुरुदेव के रूप में आए हैं"
अध्याय 8: नरक के दूत
(अरुण का कमरा अब पूरी तरह बदल चुका है। धूप, अगरबत्ती, गुरु की तस्वीर, और दीया लगातार जल रहा है। कमरे में शांति है — पर वो शांति अब एक अंतर्मन की उथल-पुथल से भारी लग रही है। अरुण दिनभर ध्यान और नामजप में लीन है।)
अरुण (मन में):
"ॐ तत् सत् सतनाम... हर श्वास के साथ गुरु मेरे भीतर हैं... मैं इस सत्य का...रक्षक हूँ"
(तभी उसे फिर वही फुसफुसाहट सुनाई देती है — आवाज़ अब साफ़ है, जैसे कोई उसके भीतर बोल रहा हो।)
अवाज़:
"अरुण, सावधान! तुझे सबक सिखाने के लिए तेरा पिता बाउंसरों के साथ आ रहा है..." (अरुण की आँखें चौंक जाती हैं। वह सतर्क हो जाता है। अचानक उसे हर चीज़ पर शक होने लगता है।)
शाम 7 बजे...
(दरवाज़े पर दस्तक होती है। बाहर से आवाज़ आती है)
चंद्रमोहन (बाहर से):
"अरुण, बेटा... दरवाज़ा खोलो।"
अरुण (मन में, खुद से):
"पिताजी नहीं... मैं अभी रात के समय किसी से मिलना नहीं चाहता। आपके साथ और कौन है बाहर?"
चंद्रमोहन:
कोई नहीं है बेटा मैं अकेले आया हूं देखो मैं इतनी रात को अकेले कहां जाऊँगा।

(अरुण दरवाज़ा नहीं खोलता। चंद्रमोहन कई बार आवाज़ देते हैं। फिर दरवाज़ा जोर-जोर से पीटा जाता है। अरुण थोड़ी देर के लिए अंदर से दरवाजे का लॉक खोल देता है। अरुण का पिता बाहर से दरवाजे को जबरदस्ती खोल कर अंदर चले जाता है।)
(चंद्रमोहन कमरे में आते ही रसोई की ओर बढ़ते हैं। गैस जलती है, बर्तन खड़कते हैं। खिचड़ी बननी शुरू हो गई है।)
(अरुण, जो अब तक दरवाजे की ओर पीठ किए खड़ा था, अचानक ठिठक जाता है। उसकी आँखों में एक पात्र नरक के दूत की झलक आ जाती हैं — और मन में वही जानी-पहचानी रहस्यमय आवाज़ फिर से गूंजती है।)
आवाज़ (कांपती फुसफुसाहट में):
"अब वक्त है… तुझे नरक के दूत का अभिनय करना है…और अपने पिताजी को सजा देना है कैमरे चालू हैं… ये तेरा सबसे बड़ा इम्तिहान है…"
(अरुण के चेहरे पर भाव तेजी से बदलते हैं — श्रद्धा, भय, क्रोध और भ्रम की एक विस्फोटक लहर। वह धीमे-धीमे मुस्कुराता है, जैसे किसी अंत:शक्ति से आदेश मिल रहा हो।)
अरुण (धीमे स्वर में, पिता की ओर बिना देखे):
"पिताजी… आप खाना बनाना बंद करें और पहले गुरुजी के आगे दण्डवत करें।" चंद्रमोहन (पलटते हुए):
"बेटा… पहले कुछ खा लो… फिर बात करते हैं।"
अरुण (अब ऊँचे स्वर में):
"नहीं! पहले दण्डवत! ये आज्ञा है… गुरुदेव की। नहीं किया तो… सब कुछ बदल जाएगा… पूरा संसार।"
(चंद्रमोहन गहरी साँस लेते हैं। बेटे की बिगड़ती हालत देखकर, वे चुपचाप झुकते हैं और गुरु की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर दण्डवत करते हैं।)
अरुण (मन में आवाज़ सुनता है):
"देखा! ये लोग पहले गुरुजी का विरोध करते थे... अब तुम्हारे सामने नाटक कर रहे हैं..."
अरुण (कठोर स्वर में):
"सिर्फ एक बार नहीं... हजार बार! एक हज़ार दण्डवत करो!"
(चंद्रमोहन चुपचाप दण्डवत करते हैं — एक... दो... तीन... तीस तक आते-आते उनकी साँस फूल जाती है, माथे से पसीना टपकने लगता है। वे ज़मीन पर बैठ जाते हैं, थके हुए, आँखें नम।)
चंद्रमोहन (थके स्वर में):
"बेटा, अब नहीं हो रहा मुझसे… मैं बूढ़ा हो गया हूँ…"

(अरुण की आँखों में आग है। वह अचानक एक पुरानी बेल्ट उठाता है और कमरे में चक्कर काटने लगता है — जैसे मंच पर कोई नरक का दूत हो।)
(वह बेल्ट से पिताजी को एक झटका देने का अभिनय करता है — हवा में बेल्ट घूमती है, लेकिन चंद्रमोहन कुछ नहीं कहते। वे चुपचाप ज़मीन पर बैठे हैं, थककर, बेटे की हालत देख कर आत्मसमर्पण की स्थिति में। अरुण चिल्लाकर कहता है आज मैं इस पापी आत्मा को सजा दूँगा।)
(तभी दरवाज़े पर तेज़ खटखटाहट होती है।)
मकान मालकिन चंद्रप्रभा(बाहर से):
"अरुण! क्या हो रहा है? लोग कह रहे हैं तुम चिल्ला रहे हो… सब ठीक तो है?"
(अरुण दरवाज़ा नहीं खोलता। तभी पड़ोसी भी आ जाते हैं। कोई कहता है —)
पड़ोसी रेखा:
"भूत चढ़ा है इस लड़के पर। किसी ओझा को बुलाओ!"
पड़ोसी मयंक:
"पागल हो गया है…मैं अभी पुलिस को बुलाता हूं"
अरुण (चिल्लाकर):
बुलाओ पुलिस को मैं भी यही चाहता हूं कि पुलिस आए और मुझे सच्चाई बताए कि मेरे साथ क्या हो रहा है।
(भीड़ इकट्ठा हो चुकी है। तभी दरवाज़े से एक जानी-पहचानी आवाज़ आती है —)
अतुल (अरुण का ग्रामवासी, शहर में कार्यरत):
"अरुण! दरवाज़ा खोल… मैं हूँ अतुल। मैं तुझे लेने आया हूँ…"
(अरुण दरवाज़ा खोलता है, सिर्फ अतुल के लिए। उसे देख, उसकी आँखों में थोड़ी नरमी आती है।)
अतुल (धीरे से):
भाई… तू ठीक नहीं है। तुझे किसी मनोचिकित्सक से मिलना चाहिए। देख, यह बीमारी है… कोई दैवी शक्ति नहीं।
अरुण (फुसफुसा कर):
"रात को नहीं… कोई मुजे बाहर ले जाए तो जान जा सकती है। दुश्मन देश के कमांडो बाहर मेरा इंतजार कर रहे हैं। रात को वो मुझ पर हमला कर सकते हैं।"
(अतुल कुछ नहीं कहता। वो उसे आश्वस्त करता है की वह पूरी तरह सुरक्षित है। अरुण रात को अपने ही कमरे में सोता है।)
अगली सुबह — मनोचिकित्सक विनीत कुमार का क्लिनिक
(अरुण चुप है। दीवार की ओर देखता रहता है और चिल्लाकर कहता है की यहाँ पर परमाणु बम गिरेगा विनीत कुमार शांत स्वर में उससे सवाल करते हैं।)

डॉ. विनीत कुमार:
"अरुण, क्या तुम मुझसे बताओगे कि क्या हो रहा है तुम्हारे साथ?" (अरुण कोई जवाब नहीं देता।)
डॉक्टर:
"क्या तुमने कोई नशा किया है?"
(अरुण अचानक चिल्लाता है।)
अरुण:
"नशा तुमने किया है! मैंने नहीं!"
(डॉक्टर थोड़ी देर चुप रहते हैं, फिर धीरे से डायरी में कुछ लिखते हैं।)
डॉ. विनीत:
"तुम्हें बायपोलर डिसऑर्डर है, अरुण। हम इलाज शुरू करेंगे — ECT, मूड स्टैबिलाइज़र्स… आज तुम्हें यहीं रुकना होगा कल से तुम्हारा इलाज शुरू होगा।" (अरुण का पिता और अन्य लोग रुकने से मना कर देते हैं और डॉ से दवा लिखवा कर गाँव चले जाते हैं। गाँव आने पर अरुण अपने आप को एक कमरे में बंद कर देता है और दवा खाने से मना कर देता है। अगली सुबह उसके घर वाले दरवाजे का लॉक थोड़ कर अरुण को मनोचिकित्सक के पास ले जाते हैं।)
(इलाज शुरू होता है। धीरे-धीरे अरुण शांत होने लगता है — लेकिन फिर भी वो डॉक्टर से नहीं कहता कि अब भी उसे आवाज़ें सुनाई देती हैं।)
(डॉक्टर उसे दवाइयाँ देते रहते हैं… लेकिन उसकी आँखों में रहस्य की परछाई वैसी की वैसी रहती है।)
अध्याय 9: अधूरी उड़ान
(कुछ दिनों बाद अरुण और उसका पिता शहर आते हैं।)
(स्थान: शहर में अरुण का कमरा। कमरे के भीतर चंद्रमोहन चुपचाप कपड़े और किताबें बैग में रख रहे हैं। अरुण खिड़की के पास खड़ा है, और दूर आसमान को ताक रहा है।) अरुण (धीमे स्वर में):
"पापा… मैं यहीं रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहता हूँ। डॉक्टर ने भी कहा है कि मैं धीरे-धीरे ठीक हो रहा हूँ। मुझे… मुझे एक और मौका चाहिए।"
(चंद्रमोहन बिना पलटे धीरे-धीरे कपड़े तह करते रहते हैं। उनके चेहरे पर एक अजीब सी कठोर चुप्पी है।)
चंद्रमोहन:
"मौका… किस्मत वाले लोगों को मिलता है, अरुण। तेरी तो किस्मत ही खराब है। तेरे लिए ये शहर नहीं, गांव ही ठीक है। तू अभी स्वस्थ नहीं है तुझ पर किसीने उपरी जादू कर दिया है। हम तुझे अब गाँव में स्वस्थ करेंगे।"

अरुण (रुकते हुए, आवाज़ में हलका कंपन):
"तो आप भी हार मान गए?
आप भी मानते हैं कि मुझ पर काला जादू हुआ है?"
(चंद्रमोहन पलटते हैं। पहली बार उनकी आँखों में आँसू की परछाईं दिखती है, मगर जवाब में अब चुप्पी है। चंद्रमोहन कोई जवाब नहीं देता।)
(अरुण फ्लैशबैक से वर्तमान में आ जाता है। अब वह अपने बारे में सोचता है कि वह सपने की आवाज कहाँ से आती हैं लेकिन अरुण को कभी इसका सही जवाब नहीं मिलता। वो आवाजें आज भी उसके मन में आती हैं।)
(अरुण धीरे से बाहर जाने के लिए निकलता है। वह बाजार की ओर चल देता है — सिर झुका हुआ, दिल भारी।)
(रास्ते में सोचता हुआ…)
अरुण (मन में):
"क्या मैं सच में बीमार हूँ?
या ये दुनिया मेरे भीतर की आवाज़ों को सुनने के लिए तैयार नहीं?
क्या होगा अगर मेरी नौकरी नहीं लगी?
क्या मेरा कोई भविष्य है भी?"
(तभी उसे सामने एक अजनबी व्यक्ति दिखता है — सफेद दाढ़ी, सीधी आंखें और सूती कुर्ता पहने। वह उसे ठहरकर देखता है।)
अजनबी:
"तुम अपने ही बनाए विचारों में कैद हो, अरुण। वहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं।" (अरुण उसकी बातों पर ध्यान नहीं देता और वहां से आगे बढ़ जाता है। आज वह लौटकर घर नहीं जाता। वह अब सदा के लिए विचारों से मुक्त हो गया है। उसकी कहानी अब उन्हीं विचारों में कैद हो गई जहाँ वह खुद कैद था।)
-अरुण सिंह